भारतीय खेल प्राधिकरण
SPORTS AUTHORITY OF INDIA

प्रेस विज्ञप्ति
नई दिल्ली: 4 मार्च 2022

स्ट्रैंड्जा स्वर्ण पदक विजेता नीतू ने अपनी यात्रा में भा.खे.प्रा.रोहतक के योगदान को श्रेय दिया

4 मार्च, 2022 नई दिल्ली: स्ट्रैंड्जा मेमोरियल 2022 की स्वर्ण पदक विजेता नीतू घंघस ने अपना पूरा ध्यान इस मई के लिए निर्धारित मुक्केबाजी विश्व चैंपियनशिप में एक बार फिर प्रतिष्ठित पदक जीतने पर लगाया है। हरियाणा की 21 वर्षीय मुक्केबाज ने पिछले सप्ताह सोफिया में आयोजित प्रतिष्ठित स्ट्रैंड्जा टूर्नामेंट में अपनी पहली भागीदारी में 48 किग्रा वर्ग में स्वर्ण पदक जीता ।

"मैंने सुना है कि स्ट्रैंड्जा सबसे पुराने मुक्केबाजी टूर्नामेंटों में से एक है और मैं अपने देश के लिए स्वर्ण पदक जीतकर बहुत गौरवान्वित महसूस कर रही हूं। अब, मैं इस साल धीरे धीरे आगे बढ़ना चाहती हूं। हमारे पास विश्व चैंपियनशिप है और मैं अपना पूरा ध्यान उस पर लगाना चाहती हूं और वहां स्वर्ण पदक जीतना चाहती हूं" नीतू ने भारतीय खेल प्राधिकरण को बताया।' "मैं अपनी क्षमता और कमजोरियों पर कार्य करने के लिए भास्कर भट्ट सर(प्रशिक्षक) और अन्य प्रशिक्षकों के साथ बैठना चाहती हूँ। मैं अपनी तैयारी करके वहाँ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देना चाहती हूँ।"

वर्ष 2012 में मुक्केबाज़ी शुरू करने वाली नीतू को अपनी यात्रा में कई बाधाओं का सामना करना पड़ा । जब भी वह पीछे मुड़कर देखती है, तो एक नया जीवन देने के लिए वह भा°खे°प्रा° राष्ट्रीय उत्कृष्टा केंद्र रोहतक को श्रेय देती है, जब उन्हें जानलेवा पैल्विक चोट लगी थी । "मुझे 2016 में भा°खे°प्रा° राष्ट्रीय मुक्केबाज़ी अकादमी रोहतक में चुना गया था। मुझे उम्मीद से कहीं ज्यादा समर्थन मिला। मुझे जो चोट लगी थी उसका निदान वहां किया गया था। वहाँ अच्छे डॉक्टर और फिजियो थे जिन्होंने मेरा बहुत अच्छे से इलाज किया," नीतू ने आगे कहा । "फिजियो, प्रशिक्षकों और डॉक्टरों की वजह से ही मुझे आज स्वर्ण पदक मिला है।

नीतू ने आगे बताया कि"इसके अलावा, मुझे जिस भी आहार की आवश्यकता होती थी, वह भा°खे°प्रा°रोहतक में मुझे मिलता था और इसके अलावा मुझे जिसकी भी आवश्यकता होती वे सभी सुविधाएं मुझे उपलब्ध कराई जाती थी । मेरे पास अच्छे मुक्केबाज़ी साथी भी नहीं थे। एक बार जब मैं वहां शामिल हुई, तो मुझे वह दृष्टि मिली कि कैसे कदम दर कदम प्रगति मिल सकती हैं और मुझे पता था कि चैंपियन बनने के लिए मुझे एक अलग स्तर पर जाना होगा, मैंने वहां अपनी खेल तकनीक बनायी और यह भी सीखा कि अपने खेल को एक विरोधी के अनुसार कैसे ढालना है।

नीतू घंघस, एक खेलो इंडिया स्कॉलर भी हैं जिन्हें 2020 और ओलंपिक के बाद फिर से 2021 में टॉप्स विकास योजना में शामिल किया गया था। टॉप्स सहायता के बारे में बोलते हुए, उन्होंने उल्लेख किया कि, "भा°खे°प्रा° ने मेरी बहुत अधिक सहायता की हैं । टॉप्स में होने से मुझे जेब खर्च प्राप्त करने में मदद मिलती है और जब भी मुझे आवश्यकता होती है तो वो सब मदद मुझे मिलती है ।टॉप्स मुझे मेरी जो भी आवश्यकता होती हैं उसे जल्दी से जल्दी उपलब्ध कराता हैं । मैं इस समर्थन के लिए बहुत बहुत आभारी हूं । खिलाड़ियों को इस तरह के समर्थन की जरूरत है।"

21 वर्षीय खिलाड़ी विश्व में अपना सर्वश्रेष्ठ देने के पश्चात राष्ट्रमंडल खेलों में भाग लेना चाहती हैं । हालांकि,वह जानती हैं कि भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए उन्हें कई प्रतियोगिताओं का सामना करना पड़ेगा, जिसका मेरी कॉम जैसी खिलाड़ी भी प्रतीक्षा केआर रही हैं। "विश्व चैंपियनशिप के बाद मेरा अगला लक्ष्य रष्टमंडल खेलों में भाग लेना हैं। यह संभव हो सकता है कि मैं चयन परीक्षणों में मेरी (कॉम) दीदी के खिलाफ जाऊँ । मुझे खुशी होगी कि मुझे उनके साथ मुक़ाबला करने का अवसर मिलेगा । मैं अपना खुद का खेल खेलना चाहती हूँ और अपना सर्वश्रेष्ठ देना चाहती हूँ ।